मूल भाव पर पैसा वसूल

शेयर मार्केट की इन दिनों चांदी ही चांदी हो रही है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि कई कंपनियों के शेयर 200 फीसदी तक बढ़ गए हैं। वहीं इससे भी दिलचस्प बात यह है कि इस समय आईपीओ यानी पब्लिक इशूज की भी लाइन लगी है। एक के बाद एक कंपनियां पूंजी बाजार में उतर रही हैं। आईपीओ के बारे में एक्सपर्ट्स से बात करके जानकारी दे रहे हैं **मधुरेन्द्र सिन्हा**

एक्सपर्ट पैनल

प्रणव हल्दिया
एमडी,
प्राइम
डेटाबेस

पंकज पांडेय
हेड रिसर्च,
ICICI
सिक्योरिटीज

विनोद कुमार
फाइनैंस
प्रफेसर,
डीयू

हाल ही में हैपिएस्ट माइंड का आईपीओ जारी हुआ था। इसके तहत कंपनी के प्रमोटरों ने 702 करोड़ रुपये का पब्लिक इशू पेश किया था और यह 150.98 गुना ओवर सब्स्क्राइब हुआ। इकोनॉमी के महासंकट से गुजरने के बावजूद यह आईपीओ इस दशक का आठवां सबसे बड़ा पब्लिक इशू बना। इसका मतलब साफ है कि लोग अपने पैसे को ऐसी जगह लगाना चाहते हैं जहां से बढ़िया रिटर्न मिले। शेयर बाजार में लोगों को आकर्षक दिख रहा है। नए आईपीओ लोगों को अपनी तरफ खींच रहे हैं क्योंकि उनमें तुरंत ही रिटर्न देने की क्षमता है। वहीं, कोरोना वैक्सीन की अच्छी खबर आने के बाद शेयर मार्केट ने उछाल मारना शुरू कर दिया है। वे लोग जो कोरोना के कारण गिरे शेयर बाजार में पैसा लगाने से बच रहे थे, अब नए आईपीओ में खूब पैसा लगा रहे हैं। यही कारण है कि नए आईपीओ कई गुना सब्स्क्राइब हो रहे हैं।

अगले 2 महीनों में आने वाले प्रमुख IPO

इस वक्त करीब 6 आईपीओ कतार में हैं। इनमें से कई ने तो अपनी पूरी तैयारी भी कर ली है। इनमें 6,000 करोड़ रुपये की ग्लैड फार्मा तो सफलतापूर्वक अपना इशू बेच गई। अब 1700 करोड़ रुपये का कल्याण जूलर्स का भी आईपीओ है। वैसे इस सूची में ज्यादातर टेक्नॉलजी कंपनियां हैं और किसी समय निवेशकों की डार्लिंग मानी जाने वाली स्टील कंपनियों के आईपीओ नहीं हैं। एनर्जी कंपनियों ने तो स्टॉक एक्सचेंज में कागजात दाखिल कर दिए हैं लेकिन अभी तारीख पक्की नहीं की है क्योंकि देश में पावर की डिमांड कम हो गई है। आइए, कुछ बड़े आईपीओ की बात करते हैं:

कल्याण ज्वेलर्स:

देश की सबसे बड़ी ज्वलरी कंपनियों में से एक कल्याण ज्वेलर्स दिसंबर में 1750 करोड़ रुपये का आईपीओ लेकर आ रही है। यह कंपनी भारत के अलावा खाड़ी के देशों में भी बिजनेस कर रही है। इस साल इसका सालाना कारोबार 10 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा था।

ताकत: कंपनी के पास हजारों की तादाद में कर्मचारी हैं जो उसके लिए घर-घर जाकर मार्केटिंग करते हैं। कंपनी अपने सारे उत्पादों की डिजाइनिंग और उनका उत्पादन खुद करती है। इस साल इसका शुद्ध लाभ 140.9 करोड़ रुपये था।

कमजोरी: इस समय सोने के दाम चढ़ने के बाद गिर रहे हैं।

इस इशू से मिली रकम प्रमोटरों के पास चली जाएगी और विस्तार पर कुछ खर्च नहीं होगा।

मिसेज बेक्टर्स फूड स्पेशिएलिटीज:

लुधियाना की यह कंपनी क्रीमिका बिस्किट वगैरह और इंग्लिश ओवन ब्रेड जैसे उत्पादों के लिए जानी जाती है। इसकी खुदरा बिक्री 11 राज्यों में होती है और देश भर में इसकी संस्थागत सेलिंग भी है। यह 550 करोड़ रुपये का इशू लेकर दिसंबर में आ रही है और इस रकम को राजपुरा में अपने प्लांट के विस्तार पर और दूसरे कार्पोरेट मदों पर खर्च करेगी।

ताकत: कंपनी की 6 मैन्युफैक्चरिंग यूनिट हैं और यह रोजना लगभग डेढ़ लाख ब्रेड बनाती है। यह मैक्डॉनल्ड और बर्गर किंग जैसी कंपनियों को भी ब्रेड-बन सप्लाई करती है। 31 मार्च 2020 में कंपनी का कुल कारोबार 762 करोड़ रुपये था और शुद्ध लाभ 30 करोड़ रुपये था।

कमजोरी: कंपनी का कारोबार बड़ा होने के बावजूद इसका लाभ उतना नहीं है। कोरोना काल और खासकर दिवाली पर कंपनी की बिक्री तो बढ़ी है लेकिन बाद में कैसी रहेगी, कहना मुश्किल है। उसका मुकाबला आईटीसी, ब्रिटेनिया के अलावा मॉडर्न, हारवेस्ट गोल्ड और पार्ले जैसी बड़ी कंपनियों से है।

सूर्योदय स्मॉल फाइनैंस बैंक

: देश में छोटे प्राइवेट फाइनैंस बैंकों की संख्या बढ़ती जा रही है और ये सरकारी या सेबी के नियमों के मुताबिक अपने आईपीओ लाते जा रहे हैं। इसी कड़ी में यह प्राइवेट बैंक अपने दो करोड़ शेयर बेचने जा रहा है। मार्च 2020 तक बैंक की नेटवर्थ 1000 करोड़ रुपये की थी और उसके पास 2800 करोड़ रुपये का डिपॉजिट बेस व 3,700 करोड़ रुपये का लोन पोर्टफोलियो है।

ताकत: कंपनी इशू से मिले रुपयों को अपने कामकाज के विस्तार में इस्तेमाल करेगी। कंपनी ऑटो लोन, होम लोन जैसे सभी तरह के सेगमेंट में है। बैंक के पास 60 बड़ी और कुल 477 ब्रांच हैं। यह महाराष्ट्र का अकेला प्राइवेट बैंक है जिसे स्मॉल फाइनैंस बैंक का दर्जा मिला था।

कमजोरी: कोरोना की वजह से देश में बैंकों पर बुरा असर पड़ा है और उनके लोन देने में कमी आई है, साथ ही कर्ज वसूली को भी धक्का पहुंचा है। इसका असर उनकी ग्रोथ पर हुआ है। इकनॉमी की कमजोरी का असर उन पर भी पड़ेगा।

रेल टेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया:

यह भारत सरकार का उपक्रम है। रेल मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण वाली यह कंपनी मिनी रत्न कंपनी है और रेलगाड़ियों की संचार प्रणाली, ऑपरेशन और सेफ्टी के लिए काम करती है। 30 जून 2020 तक रेलटेल ने 55,000 किलोमीटर तक फाइबर केबल बिछा रखा था और देश के 5677 रेलवे स्टेशनों को जोड़ रखा था। कंपनी मॉडर्न सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करती है।

ताकत: यह देश की सबसे बड़ी टेलीकॉम इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनी है जिसका पूरे देश में फाइबर नेटवर्क है। इसे कई प्रोजेक्ट मिले हुए हैं और यह रेलवे के डिजिटल बदलाव में बड़ी पार्टनर है। ग्राम पंचायतों में डिजिटल केबल बिछाने में भी इसने बाजी मारी है और 6500 ग्राम पंचायतों में यह काम किया है। यह देश के बाहर अपनी सर्विसेज ले जा रही है। वित्त वर्ष 2020 में इसका कुल कारोबार 1166 करोड़ रुपये का रहा जबकि शुद्ध लाभ 141 करोड़ रुपये का।

कमजोरी: इस कंपनी में ऐसी कोई कमजोरी नहीं दिखती है सिवाय इसके कि यह सरकारी नीतियों से बहुत प्रभावित होती है।

बर्गर किंग:

देश में फास्ट फूड चेनों की बढ़ती संख्या और उनकी लोकप्रियता का उदाहरण बर्गर किंग भी है जो इंटरनैशनल कंपनी है। इसकी भारतीय कंपनी को देश में रेस्तरां चेन चलाने, मार्केटिंग करने, डिवेलप करने और फ्रैंचाइजी देने का लाइसेंस है। देश के 57 शहरों में इसके 202 रेस्तरां हैं और इसे बढ़ाने की योजना है। कंपनी आईपीओ से 542 करोड़ रुपये उगाहने जा रही है। कंपनी का आईपीओ 2 दिसंबर को आएगा।

ताकत : कंपनी देश में काफी लोकप्रिय है और लॉकडाउन खत्म होने के बाद से इसका कारोबार लगातार बढ़ रहा है। इसे 2025 तक देशभर में कुल 700 रेस्तरां खोलने हैं। इसे मास्टर फ्रैंचाइजी व्यवस्था के तहत 5 फीसदी की रॉयल्टी भी मिलती है।

कमजोरी : कोरोना ने इस कंपनी के कामकाज को भारी धक्का पहुंचाया है और इसके कई फ्रैंचाइजी बंद होने के कगार पर जा पहुंचे। कंपनी को अगले साल की तीसरी तिमाही तक निगेटिव असर की आशंका है। कंपनी का मुकाबला डोमिनोज, सबवे, मैक्डॉनल्ड, केएफसी जैसी दिग्गज कंपनियों से है।

ये भी हैं लाइन में

इंडियन रेल फाइनैंस कॉर्पोरेशन: यह भी सरकारी उपक्रम है और यह इस साल के अंत तक अपना आईपीओ लेकर आ रहा है। यह भारतीय रेल के विस्तार के लिए 500-1,000 करोड़ रुपये पूंजी बाजार से जुटाएगा। कंपनी दो तरह से रेवेन्यू जुटाती है, पहले तो रोलिंग स्टॉक, इंजिन, कोच, वैगन वगैरह लीज पर देकर और दूसरा फाइनैंशल प्रोजेक्ट से।

स्टड एक्सेसरीज: फरीदाबाद स्थित यह हेल्मेट बनाने वाली देश की सबसे बड़ी कंपनी है और 21 देशों को निर्यात भी करती है। 2018 में कंपनी ने लगभग 50 लाख हेल्मेट बेचे थे। बाइक बनाने वाली सभी बड़ी कंपनियों से इसका करार है। 31 मार्च 2020 तक इसका कारोबार 437 करोड़ रुपये का था और नेट इनकम 74.50 करोड़ रुपये की थी।

हेरानबा इंडस्ट्रीज लिमिटेड: गुजरात की इस कंपनी का 650 करोड़ रुपये का इशू दिसंबर-जनवरी में आएगा। यह कंपनी कई तरह के एग्रोकेमिकल्स बनाने और उनकी मार्केटिंग के काम में जुटी है। इस समय देश में अनाज का रेकॉर्ड उत्पादन हो रहा है तो इस तरह की कंपनियों की मांग बढ़ गई है। यह कंपनी एक्सपोर्ट भी करती है।

इस वक्त आईपीओ पैसे बढ़ाने का अच्छा जरिया साबित हो सकते हैं क्योंकि फिलहाल एक्स्ट्रा इनकम के दूसरे रास्ते बंद से हो गए हैं।

(नोट: आईपीओ इशू जारी होने के समय में बदलाव हो सकता है।)

सेबी ने सख्त किए कानून

पब्लिक इशू के लिए शर्तें पूरा करना जरूरी

90 के दशक में जब आईपीओ की बाढ़-सी आ गई थी, तब निवेशकों को कई कंपनियों ने चूना लगाया था और उनके प्रमोटर जिन्हें फ्लाई बाइ नाइट ऑपरेटर कहा जाता है, उड़न-छू हो गए थे। बड़े पैमाने पर इस तरह की धांधली होने के बाद सेबी ने सख्ती की और सरकार ने कानूनों को कड़ा किया जिसका नतीजा हुआ कि ऐसे ऑपरेटरों पर रोक लग गई। सेबी के कानून इतने सख्त हैं कि किसी भी कंपनी के लिए बिना उनकी शर्तों को पूरा किए पब्लिक इशू लाना संभव नहीं। इसका नतीजा है कि अब सिर्फ जमी-जमाई कंपनियां ही पब्लिक इशू ला सकती हैं। ये ऐसी कंपनियां हैं जिनमें कुछ निवेशकों ने पहले से ही पैसा लगा रखा है और इसलिए इनमें जोखिम कम है।

पहले के मुकाबले निवेशक हुए समझदार

एक समय था जब जालसाज प्रमोटर निवेशकों की गाढ़ी कमाई हड़पकर उड़न-छू जाते थे। अब हालात बदल गए हैं। सेबी ने कई कड़े कानून बनाए जिसमें एएसबीए भी है जिसके तहत निवेशकों के पैसे को तब तक प्रमोटर हाथ नहीं लगा सकते जब तक कि शेयरों का अलॉटमेंट नहीं हो जाता। पहले बेईमान प्रमोटर निवेशकों के पैसे लेकर भाग जाते थे। यह रास्ता अब बंद हो गया है। कई कड़े नियमों के लागू होने से नए आईपीओ के प्रति निवेशकों में भरोसा जाग गया है। इसके अलावा निवेशक अब खुद ही समझदार हो गए हैं और हर चीज पढ़कर-समझकर ही निवेश करते हैं। अभी कई ऐसे उदाहरण सामने आए हैं कि ज्यादा महंगे आईपीओ में निवेशकों ने ज्यादा पैसा नहीं लगाया लेकिन मजबूत कंपनियों जैसे मझगांव शिपयार्ड में बहुत बड़ा निवेश किया।

नई इकनॉमी बिजनेस मॉडल के हैं IPO

इस समय जो आईपीओ आ रहे हैं वे नई इकनॉमी बिजनेस मॉडल के हैं यानी वे परंपरागत नहीं हैं जैसे: AMC, ब्रोकिंग, क्रेडिट कार्ड, बैंकिंग, बीमा, टेक्नॉलजी, कम्युनिकेशन आदि। ये नए तरह के उपक्रम हैं जिनमें लोगों की दिलचस्पी है और इनका भविष्य भी अच्छा दिख रहा है।